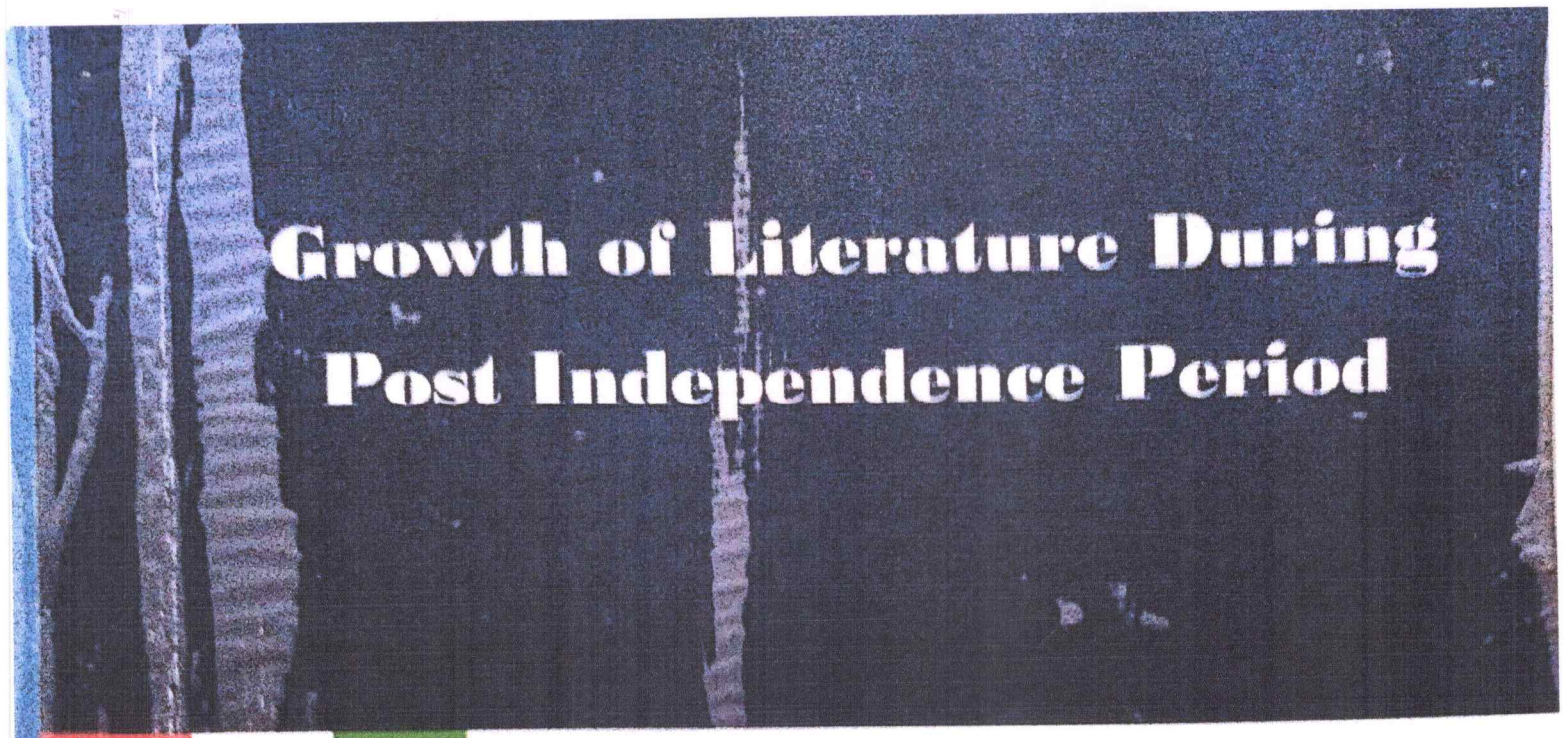

Growth of Literature During Post Independence Period

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Chief Editor

Dr. Vidyavati Rajput

Editor

Prof. Dhanyakumar Birajdar

Dr. Premchand Chavan

Scanned with OKEN Scanner

GROWTH OF LITERATURE DURING POST INDEPENDENCE PERIOD

Chief Editor

DR. VIDYAVATI RAJPUT

Editor

PROF. DHANYAKUMAR BIRAJDAR

DR. PREMCHAND CHAVAN

Asso. Editor

DR. MAHADEV PUJARI

UMED

PRINTERS & PUBLICATION, NANDED (MAH)

Scanned with OKEN Scanner

Growth of Literature During Post Independence Period
(Collection of Research Articles)

First Impression: May 2022

Copy Rights: Editorial Board

ISBN: 978-93-93079-00-8

No Part of this Publication may be reproduced or transmitted in any form by means, electronic or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the copyright owners.

DISCLAIMER
The authors are solely responsibility for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in the manner. Errors, if any, are purely unintentional and request to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

Published By:
Umed, Printers & Publications, Nanded
(Maharashtra)

Cover Page Designed by: **Sri Shivanand Gulagi**

Printed at:
Umed Printers
Nanded.

Scanned with OKEN Scanner

Index

1. समकालीन हिन्दी कविताओं में विविध विमर्श	डॉ. सीताराम के. पवार	01
2. समकालीन साहित्य में स्त्री विमर्श	प्रा. धन्यकुमार जिनपाल विराजदार	05
3. हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श	डॉ. प्रेमचंद वक्हाण	09
4 हिन्दी साहित्य में विविध विमर्श	डॉ. दीपा रागा	11
5. हिन्दी महिला साहित्य में स्त्री का संघर्षशील व्यक्तित्व	डॉ. मंजुला चौहान	13
6 स्त्री विमर्श	श्री कुपेन्द्र आर राठोड	16
7 मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	डॉ. विजयकुमार जी. पत्ते	19
8 मीज्ञ साहनी के बसंती उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ.श्याम गायकवाड	21
9. आदिवासी विमर्श	डॉ. रंजना पाटिल	23
10 हिन्दी दलित लेखिकाओं की कहानी में चित्रित समाज	डॉ. संतोष महीपति	26
11. आदिवासी विमर्श एवं: ग्लोबल गांव का देवता	डॉ शंकर ए. राठोड़	29
12 चथार्थता बनाम चेतना: हिन्दी कविता के संदर्भ में	डॉ.विलास अंबादास साळुंके	35
13 दोहरा अभिशाप और शैक्षणिक संघर्ष	डॉ. दयानंद शास्त्री	38
14 वृद्ध-विमर्श	गीता पोरते	40
15 हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ रोहणी शिंदे	43
16 स्त्री विमर्श	श्रीमती सुषमा कुलकर्णी	46
17. करतूरी कुण्डल बसै आत्मकथा में स्त्री विमर्श	डॉ. राजाबाई	48
18 स्त्री विमर्श : हिन्दी साहित्य में	श्रीमती गीता बी. सिक्कम	51
19 दमन को स्वर देने वाली हिंदी और तेलुगु की दलित लेखिकाएं	डा. बी लक्ष्मी विभागाध्यक्षा	54

Scanned with OKEN Scanner

भीष्म साहनी के बसंती उपन्यास में नारी विमर्श

डॉ.श्याम [illegible]
हिंदी अध्यापक
बीआर बी कॉलेज ऑफ कॉमर्स [illegible]

आधुनिक हिंदी साहित्य को विमर्शो का साहित्य कहा गया है।पुनर्जागरण काल से ही हिंदी साहित्य पर स्त्री विमर्श,दलित विमर्श,आदिवासी विमर्श, आदि तमाम प्रकार के विमर्श को अलग–अलग रूप में हम पाश्चात्य साहित्य में देख सकते है। हिंदी साहित्य में नारी विमर्श की शुरुआत तब हुई जब भारतीय तत्कालीन समाज में अनेक समस्याएं मौजूद थे इन समस्याओं के निर्मूलन हेतु एक और स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम उत्कर्ष पर था तो दूसरी ओर समाज सुधार की आवाज बुलंद थी।समाज द्वारा युगों से शोषित व पीड़ित वर्गो को मानवीय अधिकार दिलाने के लिए रूढ़िवादी मान्यताओं एवं रीति–रिवाजों पर भीषण प्रहार किए जा रहे थे।अनेक समाज सुधारक एवं समाज चिंतक सिरपर कफन बांधकर इस क्षेत्र में उतर आए पुरुष कृत अत्याचारों से पीड़ित नारी और अभिजात्य वर्ग द्वारा शोषित अछूत इस सुधार के केंद्र रहे। पाश्विक दासता से मुक्ति दिलाने के लिए अनेक आंदोलनों का सूत्रपात हुआ। देश में सर्वत्र समाज सुधार एवं वैचारिक परिवर्तन की लहर सी दौड़ गई। समाज से ही चेतना पानीवाला संवेदनशील साहित्यकार इस परिवर्तन से कैसे अछूता रह सकता था? उसने कला और साहित्य के माध्यम से सामाजिक समस्याओं व परिस्थितियों को अभिव्यक्त किया। नारी अस्पृश्यता और मानव जीवन से संबंधित शायद ही कोई ऐसी समस्या हो, जो इन साहित्यकारों के हाथों में न पड़ी हो।भीष्म साहनी ने भी समाज में स्थित अनेक समस्याओं को प्रस्तुत करके उसका समाधान करने का प्रयास किया है।

हिंदी ही नहीं संसार भर के उपन्यास साहित्य में स्त्री की समस्या एक सार्वकालिन विषय रही है। नारी के प्रति समाज सुधारकों का ही नहीं बल्कि साहित्यकारों का ध्यान भी उनसे संबंधित समस्याओं की ओर विशिष्ट रूप से आकृष्ट हुआ। युग – युग से पीड़ित व प्रतिडित नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण उपन्यासकारों ने बड़ी सहानुभूति के साथ किया है।

हिंदी के प्रारंभिक उपन्यासकारों में नारी सुधार की किसी बलवती भावना के दर्शन नहीं होते। उपन्यासकारों ने नारी जीवन का चित्रण अवश्य किया है। किंतु वे नारी के परंपरागत रूप को ही आदर्श मानकर उसके जीवन की दुहाई देते रहे।

पतिव्रता धर्म से दूर हटकर नारी जीवन को देखने की कल्पना तक इन उपन्यासकारों के लिए असहाय थी। सनातन हिंदू धर्म का समर्थन करने वाले उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के द्वारा समाज के सामने नारी के जो आदर्श चित्र रखे हैं, वे सभी पतिव्रता नारियों के है। गृहस्थ जीवन का केंद्र बिंदु नारी है यह परंपरावादी उपन्यासकार रूढ़िवादी आदर्श की रक्षा के लिए गृहस्थी जीवन के इकाई में कीलित हो गए थे।

हिंदी उपन्यास साहित्य में सर्वप्रथम प्रेमचंद जी ने नारी समस्याओं आधार बनाकर उपन्यासों का सृजन किया। नारी के प्रति उनमें अपार श्रद्धा थी और वे बहुत सहानुभूति से उसके जीवन का निरीक्षण करते थे। 'प्रतिज्ञा' से लेकर 'गोदान' तक उनका कोई उपन्यास ऐसा नहीं है जिसमें नारी जीवन की किसी–न–किसी समस्या का चित्रण ना हुआ हो।'निर्मला', सेवा सदन' 'गबन' यह उपन्यास नारी समस्या पर आधारित है। प्रेमचंद के बाद उपन्यास साहित्य में नारी के समग्र रूप का चित्रण किया गया है नारी के आदर्श और यथार्थ दोनों रूपों का खुलकर चित्रण हुआ। उपेंद्रनाथ अश्क, यशपाल,भगवती चरण वर्मा, रांगेय राघव आदि उपन्यासकारों ने नारी को अपने–अपने दृष्टिकोण से देखा परखा और चित्रित किया।

भीष्म साहनी जी ने अपने युग की इस प्रमुख समस्या पर गंभीर चिंतन किया है। नारी संबंधी शायद ही कोई समस्या हो,जो उनके उपन्यासों का विषय बनी हो। उनके उपन्यासों में नारी जीवन की चेतना के समग्र आयाम,परिवेश की जटिलताओं का चित्रण किया गया है। वेश्या,विवाह, शिक्षा, आदि अन्य अनेक समस्याओं का उद्घाटन उनके उपन्यास साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। समस्याओं का उद्घाटन मात्र ही नहीं, उनके संबंध में जीवंत निष्कर्ष और युग सापेक्ष निदान भी उनके उपन्यासों में प्राप्त होते है।

Scanned with OKEN Scanner

तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति वंदनीय थी। हर काल की तरह इस काल में भी नारी पुरुषों के दबाव में है वह पुरुषों द्वारा किए गए अत्याचार को मौन होकर स्वीकार करती थी।' बसंती' में अपनी असहाय स्थितियों से जूझते हुए भी समाज के संघर्ष करने की भरपूर क्षमता दिखाई देती है। संघर्षमय नारी बसंती के संदर्भ में वीरेंद्र मोहन जी के विचार नितांत उल्लेखनीय है– 'जनसामान्य का प्रतिनिधि चरित्र बसंती एक पॉजिटिव कैरेक्टर है जो अपमान, शारीरिक शोषण और मानसीय शिकंजा को एकबारगी तोड़ देती है,उनसे लोहा लेती है। अपमान का जहर, तिरस्कार और लांछन को अपनी उन्मुक्त हंसी से बेमानी साबित करती है। जहां सुरक्षा का वातावरण हो, वहां वह दीनू के पास अपने को सुरक्षित अनुभव करती है। वहां किसी के सामने फरियाद नहीं करती, घरों में काम करती है, और बाद में तंदूर चलाती, जिसे उजाड़ दिया जाता है।लगातार श्रम से जुड़ी रहती है, इसीलिए श्यामा बीवी के नीतिवादी का जवाब देती है,भगवान जी खुश कब हुए हैं? भगवान जी मेरे साथ तो सदा ही मुंह फुलाए रहते हैं, हंसो तो भी नाराज, पेड़ पर चढ़ा तो भी नाराज,किस–किससे डरकर रहूं बीबीजी? बापू से? मां से ?आपसे ? या भगवान से ?नारी ने जितना आत्म पिंडन को सहा है, उतना ही तेजी से अपनी चेतना को जागृत करके उन असहाय स्थितियों से विद्रोह भी किया है।नारी अपनी असहाय स्थितियों के प्रति कड़ा संघर्ष करती है।"

'बसंती' का पात्र एक संघर्षशील नारी चरित्र को उभरता है। बसंती एक स्त्री होते हुए अपने प्रेमी दीनू के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित है। परन्तु दीनू स्त्री की असहाय स्थिति का फायदा उठाता है। बसंती के पिता चौधरी भी उसे रुपयों के लालच में बेचना चाहता है । और एक बूढ़े नुपसक बुलाकी के साथ सौंप देना चाहते है। बसंती के संदर्भ में श्याम कश्यप के विचार उल्लेखनीय है। 'भीष्माजी ने इस उपन्यास के माध्यम से हिंदी कथा–साहित्य को एक ऐसा उदात्त और ममतामय, ऐसा संघर्षशील और शक्तिशाली 'टाईप' चरित्र प्रधान किया है, जो जीवन में अपनी भरपूर मौजूदगी के बावजूद साहित्य और कला की दुनिया में प्रायः दुर्लभ था। बसंती के अल्हड़पन बेफिक्री और तो क्या हुआ, बीबीजी कहकर हर बड़ी से बड़ी और गहरी चोट को सहजाने की ताकत उसे अपनी निश्चित टाईप में ढलती है, लेकिन यह सहजाना भि कहिं एक ऐसे रिवोल्ट की भीतर ही भीतर सुलगता पलीता छोड़ जाता है, कि बसंती जब तनकर खड़ी हो जाती है, तो भरपूर चोट भी करती है।"

परिवार समाज की आधारशिला है। इसलिए समाज की विभिन्न संस्थाओं में परिवार का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। समाज के उत्थान और पतन का मूलाधार परिवार ही होता है। व्यक्ति के पारिवारिक संस्कार ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते है। और यही व्यक्तित्व समाज का निर्माण करने में सहायक होते है। परिवार में व्यक्तियों के परस्पर व्यवहार, सहयोग, संवेदना, आदि भाव अन्य संस्थाओं की अपेक्षा अधिक दृढ़ और रागात्मक सूत्र में गुम्फित होते है। यही कारण है कि भारतीय समाज में एक लंबी अवधि से संयुक्त परिवार की परंपरा चली आ रही है। किंतु वर्तमान युग में आकर इस प्रथा का विघटन दुतगति से हुआय और हो रहा है।आधुनिक शिक्षा, नवीन विचारों एवं वायक्तिकता, औधौगिक युग के आगमन से परंपरागत पारिवारिक गठन में पर्याप्त परिवर्तन हो रहा है।

निष्कर्ष:

भीष्म साहनी जी अपने बसंती उपन्यास में बसंती पात्र के द्वारा आधुनिक युग में नारी के ऊपर समाज में कोई भी किस तरह भी उनके ऊपर अन्याय करेगा तो वह उसे सहन नहीं करेगी क्योंकि बसंती उपन्यास में उसके पिता उससे बाराहा सो रुपए में बेच देता है और उसका पति दीनू भी तीनसो रुपए में बेचता है तो वहां उनका विरोध करके वह अपनी जिम्मेदारी खुद लेती है और वह सभी से विरोध करती हुई दिखाई देती है इसीलिए ऐसा लगता है कि आज की आधुनिक युग में नारी स्वतंत्र रूप से वह हर एक कदम सोच समझकर रखने वाली दिखाई दे रही है इसीलिए भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास में बसंती पात्र के द्वारा आज की नारी का चित्रन संघर्ष करते हुए दिखाई देता है।

सहायक ग्रंथ सूची :

1. राजेश्वर सक्सेना एवं प्रताप ठाकुर– भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना।
2. डॉक्टर सुरेश बाबर– भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन।
3. डॉ. भरत कुचेकर– भीष्म साहनी व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
4. रविंद्र गासो – भीष्म साहनी की ओपन्यासिक चेतना ।

Scanned with OKEN Scanner